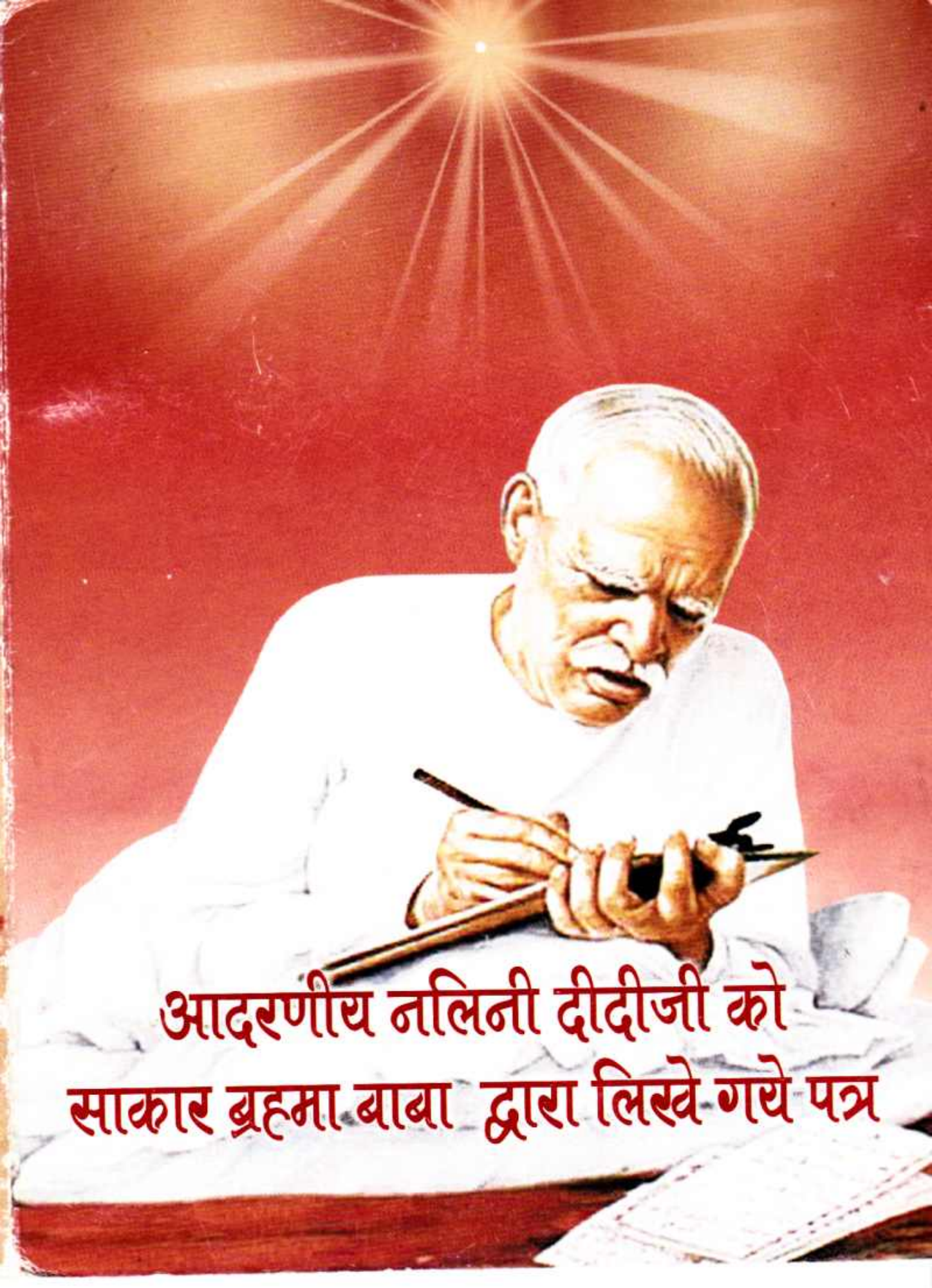

आदरणीय नलिनी दीदीजी को साकार ब्रह्मा बाबा द्वारा लिखे गये पत्र

न॰रे रतन बेटी नलनी

प्रति याद प्यार बाद

समाचार कि पत्र पाया

हर्षाया बेटी अब

न होओ मोहा अब तो

रेस करनी है विजय

माला में परोने और

मा बाप दादा लकी

स्पर्ष का वो करना

है हर सेन्टर पर भाषण

कुरती रहो मा-बाबा की

जो मुर्ली आती है वो

धारण कर हर

सेन्टर में मा बा मिसिल

भाशण करती रहो

एक देस नही

अनेक देस

दैली में अपना संस्व

चुवन कर फिर कहा

सभी सेन्टर्स पर

बजाना होगा दैली

③

मैं बेटी गुल्ज़ार

कैसे भाषण करती है

उनको सुनो और फ़िर

रेस करो रुकमणी

बा का भी भाषण

सुनो उसे रेस करो

उनका सुनती रहो और

फ़िर तुम भी फ़ालो करो

मैकिरोफ़ोन में भारत

की महमा दिखाओ

मुली तो रोज़ सुनती

हो अपना लोकिक

④

घर कुछ समय भूल

जाओ पत्र वहिवार

न करो अगर करो

तो ज्ञान तर्फ जो

तेरा लौकिक बाप

खरा हो जाइ इसे

लिखत लिखवाना अद्दा

विदाई

P-1

कि जब आने पालक्ष

फरज़न्द के पिसर माह

मे पिता मात तला है

शहज़ादे नशीन गद्दी

पुत्र अर्थ पूरा भी

करने

अच्छी मे माला सूत्र है बनना

है ने पिरोना कर ऐसा

कुल ब्राह्मण आसमान और

ऐसे भी भूषण

ओ इसमें है बनना को

home at बिगइनस चैरटी

है बनाना शुरू की घर

Facsimile of beloved Baba's letter dated 1.2.64 in sindhi to (Late) Mrs. and Dr. L.S. Mathur, Director General, India Meteorology, New Delhi. (contents given below):

1-2-64

ज्ञान सागर गीता ज्ञान दाता शिववंशी ब्रह्मा मुख वंशावली नुर-ए-रतन, सिकीलद्धे बच्चे बिपन, विजय, प्रित याद प्यार बाप-दादा का स्वीकार। बाद समाचार कि पत्र बच्चों का पाया, हर्षाया, कल्प बाद फिर दादा, माँ को पहचाना है और बेहद के बाप से बेहद सतयुगी सदा सुख का वर्सा पाने पुरुषार्थ को लगे हुए हैं, पूरी प्रालब्ध पाने। जबकि मात-पिता के फरज़न्द हो तो माता-पिता के गदी-नशीन शहज़ादे भी पूरा पुरुषार्थ कर बनना है। रूद्र माला में अच्छी रेस कर पिरोना है और आप समान ब्राह्मण कुलभूषण भी औरों को बनाना है। इस में भी चैरीटी बिगन्स एट होम (*Charity begins at home*), घर को स्वर्ग बनाना है।